## विचार बिन्दु

सब इंद्रियों को वश में रखकर सर्वत्र समत्व का पालन करके जो दृढ़-अचल और अचिन्त्य, सर्वव्यापी, स्वर्णीय, अविनाशी स्वरुप की उपासना करते हैं, वे सब प्राणियों के हित में लगे हुए मुझे ही पाते हैं। –भगवान कृष्ण

# पौधारोपण अभियान में प्रत्येक नागरिक को निभानी होगी जिम्मेदारी

राज्य में 2028 तक 50 करोड़ पौधे लगाने के लक्ष्य के साथ मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा आगे बढ़ रहे हैं। हांलाकि विश्व पर्यावरण दिवस 5 जून से प्रदेश में पौधारोपण अभियान की शुरुआत होगी और जुलाई, अगस्त और सितबर माह में मानसून के दौरान व्यापक स्तर पर वृक्षारोपण अभियान को अमली जामा पहनाया जाएगा। यह अच्छी बात है कि मानसून के दौरान 10 करोड़ पौधे लगाने के बड़े लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए सरकार अभी से मिशन मोड़ पर आ गई है और सरकार की गंभीरता को इसी से समझा जा सकता है कि मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने अप्रेल माह के शुरुआत में ही संबंधित विभागों के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ बैठक आयोजित कर सरकार की मंशा स्पष्ट कर दी है।

पौधारोपण अभियान दरअसल राज्य सरकार के हरियालों राजस्थान अभियान का हिस्सा है। पर्याव्वरण प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन से बचाव के लिए पौधारोपण समय की मांग है। राज्य सरकार गत वर्ष भी पौधारोपण हरियालो राजस्थान संचालित किया गया था और सात करोड़ पौधारोपण के लक्ष्य की तुलना में 7 करोड़ 22 लाख पौधे लगाये गये। देखा जाए तो यह कार्यक्रम अकेले किसी एक विभाग का कार्यक्रम नहीं है। वन विभाग अवश्य इसका नोडल विभाग है पर पौधारोपण के इस अभियान को सफल बनाने में प्रदेश के प्रत्येक नागरिक का दायित्व हो जाता है। इसके साथ ही वन, कृषि व संबंधित विभाग, स्कूल, पंचायत, खान, पीएचईडी सहित सभी विभागों का दायित्व हो जाता है कि अभियान की कामयाबी में अपनी भूमिका तय करें। अभियान की तैयारियां आरंभ कर दी गई है।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने अभियान के तहत राज्य के सभी जिलों में नमो नर्सरी तैयार करने को कहा है तो शहरों और गांव के आसपास की खाली जमीन, सड़क किनारे रेल्वे लाइन के किनारे-किनारे सहित परिसरों में नमो वन लगाने का संदेश दिया है। इसके साथ की आदिवासी जिलों में चंदन वन लगाने पर जोर दिया है। नमो नर्सरी में हाई टेक तकनीक के आधार पर गुणवत्तायुक्त पौधे तैयार किये जाएंगे। नमो नर्सरियों में ग्रीन हाउस, कोकोपीट और हाईटेक ट्रे आदि आधुनिक तकनीकों का उपयोग करते हुए पौध तैयार करने को कहा गया है। इसी तरह से पचांयत समिति स्तर पर एक पेड़ मां के नाम अभियान के तहत वड़े स्तर पर वृक्षारोपण करते हुए क्षेत्र में हरित जोन विकसित किये जाएंगे।

**राज्य सरकार गत वर्ष भी पौधारोपण 'हरियालो राजस्थान' संचालित किया गया था और सात करोड़ पौधारोपण के लक्ष्य की तुलना में 7 करोड़ 22 लाख पौधे लगाये गये। देखा जाए तो यह कार्यक्रम अकेले किसी एक विभाग का कार्यक्रम नहीं है। वन विभाग अवश्य इसका नोडल विभाग है पर पौधारोपण के इस अभियान को सफल बनाने में प्रदेश के प्रत्येक नागरिक का दायित्व हो जाता है। इसके साथ ही वन, कृषि व संबंधित विभाग, स्कूल, पंचायत, खान, पीएचईडी सहित सभी विभागों का दायित्व हो जाता है कि अभियान की कामयाबी में अपनी भूमिका तय करें।**

समूचे विश्व में जो पर्यावरण को लेकर जो हालात चल रहे हैं और जिस तरह से मौसम बदलाव ले रहा है और बेमौसम बरसात, बेमौसम सर्दी, बेमौसम गर्मी और ऋतु चक्र के जो हालात बदलते दिख रहे हैं उन हालातों में देश दुनिया का पर्यावरण संरक्षण के लिए सक्रिय होना जरुरी हो गया है। प्रकृति से खिलवाड़ करते हुए दुनिया समाज ने बहुत कुछ खो दिया है। विकास के नाम पर पेड़ो की अंधाधुध बली चढ़ाई जाती रही है। शहरीकरण के चलते गांवों के नष्ट होते जा रहे हैं। जंगल कम होते जा रहे हैं। इस सबसे जैव विविधता पर नकारात्मक प्रभाव देखने में आ रहा है। हालात यह होते जा रहे हैं कि शहरों की गगनचुंबी इमारतों के चलते धूप सेवन दूर की बात होता जा रहा है। प्रकृति प्रदत्त स्वास्थ के लिए लाभकारी हवा पानी तक धूषित हो गए हैं। अत्यधिक सुविधाजनक होने से वायुमंडल की गर्मी बढ़ती ही जा रही है। घरों से एक हद तक कूलर तक का स्थान एसी लेने लगे है और गांव हो या कोई भी छोटा-बड़ा शहर या महानगर वायुमंडल पर नकारात्मक असर ड़ालने वाले उत्पाद आम हो गए हैं। शुद्ध हवा, शुद्ध पानी के लिए आज तरसने लगे हैं। ऐसे में संरक्षण की सामूहिक जिम्मेदारी हो जाती है। इसके लिए फेंसिंग, पौधे लगाने के लिए गड़डे तैयार करने के साथ ही अन्य तैयारियां पूरी करने के लिए पर्याप्त समय है और तीन माह के इस समय में संबंधित विभागों को इसकी तैयारी कर लेनी होगी।

हरियालो राजस्थान के तहत जहां 10 करोड़ पौधे लगाना एक बड़ा और महत्वाकांक्षी लक्ष्य हैं पर इस राज्य सरकार की ईच्छा शक्ति को देखते हुए इस लक्ष्य को अर्जित करना कोई मुश्किल भरा काम भी नहीं होगा। चूंकि जल, जंगल और पर्यावरण को बचाना समूचे मानव समाज की जिम्मेदारी है ऐसे में पौधारोपण के इस पुनित कार्य में प्रदेश के प्रत्येक नागरिक को अपनी भूमिका तय करनी होगी। सबसे अच्छी बात यह है कि मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने हरियालो राजस्थान अभियान को केवल पौधारोपण तक ही सीमित नहीं रखा है अपितु लगाये जाने वाले पौधे के संरक्षण की जिम्मेदारी भी तय की है। ऐसे में 2028 तक 50 करोड़ पौधे लगाने का लक्ष्य पूरा होना ही है और इसका प्रकृति और पर्यावरण दोनों पर सकारात्मक प्रभाव आने वाले सालों में देखने को मिलेगा। सरकार के साथ ही गैरसरकारी संस्थाओं और प्रदेश के प्रत्येक नागरिक को इस अभियान में अपनी भूमिका निभानी होगी।

**–अतिथि सम्पादक,**
**डॉ.राजेन्द्र प्रसाद शर्मा**
**( वरिष्ठ लेखक )**

## राशिफल शुक्रवार 10 अप्रैल, 2026

पंडित अनिल शर्मा

वैशाख मास, कृष्ण पक्ष, अष्टमी तिथि, शुक्रवार, विक्रम संवत 2083, पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र दिन 11:28 तक, शिव योग सायं 6:30 तक, बालव करण दिन 10:18 तक, चन्द्रमा सायं 6:04 से मकर राशि में संचार करेगा।

**ग्रह स्थितिः** सूर्य-मीन, चन्द्रमा-धनु, मंगल-मीन, बुध-कुम्भ, गुरू-मिथुन, शुक्र-मेष, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह

आज शीतलाअष्टमी बूढ़ा बास्योड़ा, कालाष्टमी है। आज बुध मीन में रात्रि 11:13 से प्रवेश करेगा।

**श्रेष्ठ चौघड़ियाः** चर सूर्योदय से 7:46 तक, लाभ-अमृत 7:46 से 10:54 तक, शुभ 12:28 से 2:02 तक, चर 5:10 से सूर्यास्त तक।

**राहूकालः** 10:30 से 12:00 तक। सूर्योदय 6:11, सूर्यास्त 6:45

**मेष**
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं। व्यावसायिक/आर्थिक मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी।

**सिंह**
व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

**धनु**
व्यावसायिक वार्ता के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

**वृष**
अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। मित्रों/रिश्तेदारों से मतभेद हो सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं।

**कन्या**
घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। अतिथियों के आगमन से उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

**मकर**
घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। मन में असंतोष बना रहेगा। खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

**मिथुन**
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा, उत्सव जैसा माहौल रहेगा। आज आपसी सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

**तुला**
व्यावसायिक कार्यों से संबंधित वार्ता सफल रहेगी। व्यावसायिक यात्रा संभव है। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन हो सकता है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

**कुंभ**
आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

**कर्क**
व्यक्तिगत परेशानियां दूर होने लगेगी। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में शुभ संदेश प्राप्त होंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

**वृश्चिक**
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में महत्वपूर्ण परामर्श मिलेगा।

**मीन**
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

# होम्योपैथिक चिकित्सा प्रणाली में प्रचलित भ्रांतियां एवं वास्तविक तथ्य

## होम्योपैथी के जनक, भीष्म पितामह व पुरोधा हैनिमेन जी की 271वीं जयंती पर होम्योपैथी पर विशेष

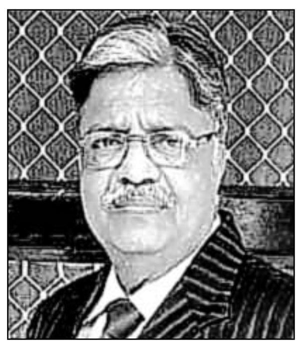

प्रो. डॉ. राजीव सक्सेना

10 अप्रेल विश्व हौम्योपैथिक दिवस के अवसर पर वरिष्ठ होम्योपैथ प्रो. डॉ. राजीव सक्सेना जो कि वर्तमान में स्वास्थ्य कल्याण होम्योपैथिक मेडिकल कॉलेज में वरिष्ठ आचार्य हैं, ने होम्योपैथिक चिकित्सा प्रणाली के मिथक, गलतफ़हमिया, भ्रांतियां, वहम्, संदेह तथा वास्तविक तथ्यों पर सविस्तार व सकारात्मक रूप से अवगत कराया तथा प्रकाश डाला।

होम्योपैथिक चिकित्सा प्रणाली के भीष्मपितामह, मील के पत्थर व जनक डॉ. क्रिश्चियन फ्रेडरिक सेमुअल हैनीमेन जी की 271वीं जयंती, सम्पूर्ण होम्योपैथिक जगत में विश्व होम्योपैथिक दिवस के रूप में मनायी जा रही है। ये एक सर्व कालिक, सुग्राही, जानीमानी व सम्पूर्ण तथा मशहुर चिकित्सा पद्धति है जो की आज के समय में किसी परिचय की मोहताज नहीं हैं, जिसने पूरे विश्व में कोरोना काल की विषम व दुरूह परिस्थितियों में भी अपनी सफलता का डंका बजवाया, परचम फहराया व लोहा मनवाया है। यद्धपि होम्योपैथी एक स्थायी, सुरक्षित, सम्पूर्ण व पूर्णतया भरोसेमंद चिकित्सा पद्धति है व पूरे विश्व में लगभग 81 देशों के 50 करोड़ से ज्यादा लोग इस पर भरोसा करते हैं व इसे आम आदमी की चिकित्सा पद्धति कहा जाता है जो सहज, सरल व सस्ती होने के साथ-साथ जीवन दायिनी व संजीवनी भी है। सामान्यतः इसका कोई भी दुष्कर व विपरीत प्रभाव नहीं होता तथा रोगी द्वारा बताई गई बीमारी व लक्षणों के इतिहास व रोग को जान कर उसका सफलता पूर्वक इलाज किया जाता है जो कि, खिलाड़ियों, बच्चों, बुजुर्गो, गर्भवती महिलाओं, शिशुओं व युवाओं पर कारगर है व शल्य चिकित्सा की कई गम्भीर बीमारियों में भी कारगर हैं। होम्योपैथी ऐसी बीमारीयों व लक्षणों का विशेष रूप से ईलाज करने में सहायक है जिनका मूल कारण अज्ञात होता है। होम्योपैथी किसी रोग का नहीं बल्कि सम्पूर्ण रोगी का ईलाज करती है।

मरीज के गुण, अवगुणों व लक्षणों को प्रधानता दी जाती है। होम्योपैथिक चिकित्सा प्रणाली ने सम्पूर्ण चिकित्सा के क्षेत्र में सफलतापूर्वक अपनी एक विशिष्ट, अलग व मजबूत पहचान बना ली है। ये पद्धति पूर्णत सत्यता पर आधारित है व बहुत अच्छे सफलता के अनुभव करवाती है तथा कुशल, प्रशिक्षित व पंजीकृत चिकित्सक से ईलाज करवाने पर मरीज को पूर्ण रूप से व जड़ से बीमारी से स्थायी छुटकारा मिल जाता है तथा आज भी सस्ती व हानि रहित होम्योपैथी चिकित्सा प्रणाली जरूरतमंदो, गरीबों व असहायों के लिए रामबाण व वरदान साबित हुई है। विगत लगभग 229 वर्षो से ये सर्वत्र सफलता पूर्वक आज के आधुनिक युग में अपना प्रचार-प्रसार कर रही है मगर इसके इतर आज भी इस पद्धति के लिए कई मिथक, भ्रांतियाँ, गलतफ़हमिया, संदेह व उपजे प्रश्नचिन्हों के बारे में विस्तार पूर्वक व तथ्यपरक तथा सच्चाई से रूबरू करवाया, जो इस प्रकार है :-

**1.भ्रान्ति :-** होम्योपैथिक चिकित्सा के मध्य में रोगी विशेष परिस्थितियों व आपातकाल में दूसरी पद्धतियों व उनकी औषधियों का सेवन नहीं कर सकता?

**तथ्य :-** विशेष परिस्थितियों व आपातकाल में मरीज दूसरी पद्धतियों को व उनकी औषधियों को अपना सकता है व तदुपरांत पुनः होम्योपैथिक चिकित्सा आरम्भ कर सकता है व कुछ विशेष किस्म के मरीजों में तो दो-तीन पैथी की दवाईयां एक साथ चल सकती हैं।

**2. भ्रान्तिः-** होम्योपैथी/होम्योपैथिक चिकित्सक पहले रोग बढ़ाते है व फिर ठीक करतें हैं?

**तथ्यः-** सामान्यतः हर केस में ऐसा नहीं होता, मरीज कई बार पुराने कई रोगों के साथ दूसरी विभिन्न चिकित्सा पद्धतियों से परेशान होकर आता है, अतः कभी बीमारियों व विशेषकर त्वचा जनित बीमारीयों में रोग व लक्षण दब जातें हैं व सुसुप्त व छिपी हुई अवस्था में चले जाते हैं तो ईलाज के दौरान कई बार दबे हुए/छिपे हुए लक्षण पुनः अपने आप उभर आतें हैं, मगर उनके पूर्णतया निकल जाने के बाद व होम्योपैथिक इलाज से रोगी पूर्णतया ठीक हो जाता है।

**3. भ्रान्ति :-** होम्योपैथी में बहुत ज्यादा परहेज करना पड़ता है ?

**तथ्य :-** मुख्य परहेज इसमें बीमारी का व रोगानुसार बताया जाता है ना की विशेष व सम्पूर्ण चीजों का, होम्योपैथिक दवाईयां जीभ के द्वारा अवशोषित होती है इसलिए मुख्य परहेज सिर्फ ये है कि हर डोज/दवाई के सेवन के समय से 10 मिनट पूर्व व 10 मिनट पश्चात् मुँह व जीभ का साफ होना अत्यावश्यक है।

**4. भ्रान्तिः-** शर्करा/मधुमेह के मरीजों को होम्योपैथिक दवाईयां नही लेनी चाहिये?

**तथ्यः-** इन छोटी-छोटी गोलियों में शक्कर की मात्रा, काफी कम व अल्पतम के बराबर होती है फलस्वरूप कोई नुकसान नहीं होता फिर भी विशेष परिस्थितियों में ऐसे मरीजों को दवाई तरल अवस्था/ मात्र द्रव को पानी में मिलाकर दिया जाता है।

**5. भ्रान्तिः-** होम्योपैथिक दवाईयां शराब/एल्कोहल से बनायी जाती है?

**तथ्यः-** दवाईयां उदासीन, निष्क्रिय व अक्रियाशील एल्कोहल की अल्पमात्रा से बनायी जाती हैं व शक्तिकृत की जाती हैं जिसमें एल्कोहल का प्रभाव खत्म हो जाता है जो कि पूर्णतया हानि रहित होता है।

**6. भ्रान्तिः-** होम्योपैथी सिर्फ मरीज व चिकित्सक के भरोसे व विश्वास पर कार्य करती हैं इसका कोई वैज्ञानिक आधार या प्रमाणीकरण नहीं है?

**तथ्यः-** यह पूर्णरूपेण भ्रामक व असत्य है क्योंकि ये ही एक मात्र पद्धति है जिसमें सभी होम्योपैथिक दवाईयों का प्रयोग व परीक्षण, स्वस्थ मनुष्यों पर करके उनसे प्राप्त लक्षणों को इस चिकित्सा का आधार बनाया जाता है व परीक्षण हर आयु व वर्ग के नर व नारी पर किया जाता है, ना कि जानवरों या पशु पक्षियों पर।

**7. भ्रान्ति :-** होम्योपैथिक चिकित्सक, देसी दवाई देने वाले, नीम हकीम व अप्रिशिक्षित होते हैं ?

**तथ्य :-** इस क्षेत्र में लगभग 280 से अधिक मान्यता प्राप्त कॉलेज संचालित हैं जिसमें क्रमशः भारत के स्नातक (बी.एच.एम.एस.ए5.5 वर्षीय पाठ्यक्रम) एवं स्नातकोत्तर (3 वर्षीय पी.जी./एम.डी.पाठ्यक्रम) व पीएच.डी. पाठ्यक्रम भी सफलतापूर्वक चल रहें है तथा देश में लगभग साड़े तीन लाख से ज्यादा प्रशिक्षित व सुशिक्षित होम्योपैथिक पंजीकृत चिकित्सक कटिबद्धता से कार्य कर रहें है तथा राज्यों व केन्द्र में सभी राजकीय चिकित्साल्यों में इन्हीं चिकित्सकों द्वारा मरीजों का सफलतापूर्वक ईलाज किया जाता है।

**8. भ्रान्तिः-** ये देसी दवाईयां होती है?

**तथ्यः-** ये पूर्णतया प्रमाणिक दवाईयां होती है जो स्वस्थ्य मनुष्यों पर प्रमाणिक है व उन पर प्रूव/सिद्ध की जाती हैं व दवाईयों का प्रमाणीकरण होने के पश्चात ही उन्हें प्रयोग में लाया जाता है।

**9. भ्रान्ति :-** दवाई बहुत धीमें व देरी से असर करती है ?

**तथ्य :-** ऐसा नहीं है सभी लक्षणों की यदि सही पहचान कर ली जाये तो गोली, गोली की तरह काम करती है व इसमें मरीजों से प्राप्त लक्षणों के आधार पर दवायी दी जाती है बस लक्षण की सही पहचान व दवाई का सही चयन होना चाहिए।

**10. भ्रान्तिः-** होम्योपैथिक दवाईया बहुत धीरे-धीरे काम/असर करती हैं?

**तथ्यः-** ऐसा कदापि नहीं है। क्योंकि ज्यातर बीमारीयों में रोगी होम्योपैथिक चिकित्सक के पास पुरानी/असाध्य व कई बीमारीयों में लंबे इतिहास के साथ उपचार के लिए आता है, अतएव उसके इलाज में काफी अधिक समय लगता है व कई बीमारीयों में तो दूसरी पैथी की दवाईयों के दुष्प्रभाव को भी हटाना पड़ता है अतः समय लगना स्वभाविक है। कई त्वरित/शीघ्र बीमारियों जैसे- खांसी, सर्दी, जुकाम, बुखार, एलर्जी, पेटदर्द, सिरदर्द, पित्ती, त्वचा जनित बीमारियों में तुरंत, त्वरित व शीघ्र असर दिखता है।

**11.भ्रान्तिः-** सभी होम्योपैथिक दवाईयां मीठी, सफेद व एक समान होती है?

**तथ्यः-** बिल्कुल नहीं, गोलियां, तरल अवस्था व और भी दूसरी अवस्थाओं में मिलती हैं जो कि कुछ में देखने में समान हो सकती हैं मगर इस पद्धति में प्रत्येक रोगी के लिए उसकी दवाई का चयन उसके रोग के आधार पर ना होकर उसके लक्षणों, स्वभाव व व्यक्तित्व के आधार पर किया जाता है। हर मरीज का व्यक्तित्व अलग होता है अतः समान रोग निदान होने पर भी हर एक रोगी की दवाई भिन्न-भिन्न होती हैं अतः किसी भी एक रोगी की दवाई दूसरे रोगी को बिना होम्योपैथिक चिकित्सक के व चिकित्सकीय परामर्श के बिना नहीं लेनी चाहिये।

**12. भ्रान्तिः-** मरीज का इलाज काफी लम्बा चलता है?

**तथ्यः-**मरीज व केस यदि काफी पुराना हो व कई पद्धतियों के दुष्प्रभाव से गुजर कर मरीज आया है व कई बीमारियां यदि एक साथ हों तो कुछ मरीजों व विशेष परिस्थितियों में ऐसा होना संभव है।

**13. भ्रान्ति :-** होम्योपैथिक दवाईयां चमत्कारिक व जादुई होती है तथा हरेक रोग को ठीक कर सकती है ?

**तथ्य :-** यह तथ्य सही नहीं हैं सभी दुसरी पद्धति की तरह इसकी भी अपनी सीमाएं हैं। जब किसी बीमारी में मरीज होम्योपैथिक दवाई से ठीक नहीं होता तब उसे ऐसी विशेष परिस्थिति व बीमारी में दूसरी चिकित्सा पद्धति का भी सहारा लेना पड़ सकता है।

**14. भ्रान्ति :-** रोगी को होम्योपैथिक दवाई ज्यादा मात्रा में व बार-बार लेनी पड़ती है ?

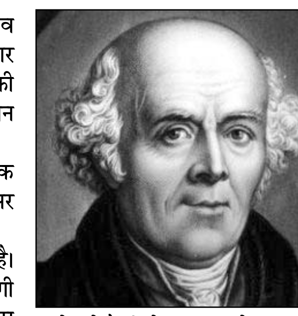

होम्योपैथी के जनक सेमुअल क्रिश्चियन फ्रेडरिक हैनीमेन

**तथ्य :-** सर्वथा गलत है, रोगी को पूर्णतया स्वस्थ होने के लिए बीमारी के अनुसार, पंजीकृत, सुशिक्षित व प्रशिक्षित चिकित्सक द्वारा अनुकूल मात्रा में व जरूरत के हिसाब से आवश्यक दवाईयाँ दी जाती हैं।

**15. भ्रान्तिः-** गंभीर व अतिगंभीर रोगो का इलाज नहीं है?

**तथ्यः-** ट्रोमा-सर्जरी, एक्सीडेंट व अपातकालीन परीस्थितियों के संदर्भ में कोई दूसरी पद्धति हो सकता है ज्यादा कारगर हो मगर गंभीर बीमारीयों के ईलाज में होम्योपैथी भी काफी अच्छा असर दिखाती है। यह त्वचा, फेंफड़े, जोड़ो, पथरी, अस्थमा व ऑटो इम्यून डिसऑर्डर जैसी बीमारीयां तथा इन जैसी कई अन्य बीमारीयों में भी काफी उपयोगी व सफल सिद्ध हुई है।

**16. भ्रान्ति :-** होम्योपैथी की हिन्दी व अंग्रेजी की दवाईयों की किताब पढ़कर के मरीज का ईलाज किया जा सकता है ?

**तथ्य :-** यह सर्वथा झूठ व गैर कानूनी है, होम्योपैथी का सम्पूर्ण कोर्स अंग्रेजी भाषा माध्यम द्वारा ही उत्तीर्ण किया जाता है, इसके लिए प्रशिक्षित, उपाधिधारी व परीषद् तथा मंडल द्वारा पंजीकृत चिकित्सक होना जरूरी है।

**17. भ्रान्ति :-** यह छोटी-छोटी मीठी सफेद साबुदाने जैसी गोलियां है तथा कुछ भी असर नहीं करती है ?

**तथ्य :-**ये गोलियां निष्क्रिय व निष्क्रियाशील एल्कोहल द्वारा बनायी जाती है फलस्वरूप ये एक त्वरित चालक व क्रियाशील वाहक की तरह काम करती हैं। इन सफेद गोलियों को लेने से दवाई जीभ के नीचे अवशोषित होकर शरीर में पहुँचती है तथा शीघ्रातीशीघ्र अपना कार्य शुरू कर देती है। व इन गोलियों को इसी निष्क्रिय एल्कोहल द्वारा आवश्यकतानुसार शक्तिकृत / शक्तिवर्धक किया जाता है।

**–प्रो. डॉ. राजीव सक्सेना,**
**आचार्य, वरिष्ठ होम्योपैथ,**
**स्वास्थ्य कल्याण होम्योपैथिक मेडिकल कॉलेज एवं रिसर्च सेन्टर, जयपुर।**

# नवकार महामंत्र समाज में शांति, समृद्धि एवं सुरक्षा का संदेश देता है : राज्यपाल बागड़े

राज्यपाल बागड़े ने भीलवाड़ा में आयोजित विश्व नवकार महामंत्र दिवस समारोह को संबोधित किया।

- **विश्व नवकार महामंत्र दिवस पर जनसमूह ने नवकार महामंत्र का सामूहिक जाप किया**

**भीलवाड़ा, (निसं)।** नवकार महामंत्र किसी एक व्यक्ति विशेष की स्तुति नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति में रची-बसी आत्मशुद्धि, आस्था एवं साधना का प्रतीक है। यह मानव को भीतर से सशक्त बनाकर उसे उच्चतर जीवन मूल्यों की ओर अग्रसर करता है। यह विचार राज्यपाल हरिभाऊ बागड़े ने गुरुवार को जैन इंटरनेशनल ट्रेड ऑर्गेनाइजेशन द्वारा मेडिसिटी ग्राउण्ड, भीलवाड़ा में आयोजित विश्व नवकार महामंत्र दिवस समारोह को संबोधित करते हुए व्यक्त किए।

इस दौरान राज्यपाल बागड़े ने कहा कि नवकार महामंत्र विश्व के प्राचीनतम एवं पावन मंत्रों में से एक है, जो अहिंसा, अपरिग्रह एवं अनेकांतवाद जैसे सिद्धांतों पर आधारित है। यह मंत्र न केवल आध्यात्मिक उन्नित का मार्ग प्रशस्त करता है, बल्कि समाज में शांति, समृद्धि एवं सुरक्षा का भी संदेश देता है। वर्तमान वैश्विक परिस्थितियों में इसकी प्रासंगिकता और भी अधिक बढ़ गई है। राज्यपाल बागड़े ने जैन धर्म की महान परंपरा का उल्लेख करते हुए कहा कि तीर्थंकरों ने क्रोध, मोह एवं द्वेष जैसे आंतरिक शत्रुओं पर विजय प्राप्त कर आत्मज्ञान एवं मोक्ष का मार्ग प्रशस्त किया। उन्होंने आव्हान किया कि प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन में इन विकारों का त्याग कर आत्मोन्नित की दिशा में अग्रसर हो। कार्यक्रम में मंच पर गौतम दक राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) सहकारिता विभाग, सांसद दामोदर अग्रवाल, अशोक कोठारी विधायक, वाईस चेयरमैन जीतो अपेक्स महावीर सिंह चौधरी, चेयरमैन जीतो भीलवाड़ा मीठालाल सिंघवी भीलवाड़ा, संरक्षक जीतो भीलवाड़ा त्रिलोक चन्द छाबड़ा मौजूद रहे।

कार्यक्रम में सहकारिता मंत्री गौतम दक ने कहा कि वर्तमान समय में विश्व के विभिन्न हिस्सों में चल रहे संघर्ष एवं युद्ध मानवता के लिए गंभीर चिंता का विषय हैं। ऐसे परिदृश्य में भगवान महावीर द्वारा दिया गया जियो और जीने दो का संदेश अत्यंत प्रासंगिक है। उन्होंने कहा कि अहिंसा ही विश्व शांति का एकमात्र मार्ग है और इसे हमें अपने जीवन में आत्मसात करना चाहिए। सांसद दामोदर अग्रवाल ने कहा कि भारत की समृद्ध संस्कृति अहिंसा, सद्भावना एवं विश्व कल्याण के मूल्यों पर आधारित है। उन्होंने कहा कि हमारी परंपराओं में निहित संदेश-धर्म की जय हो, अधर्म का नाश हो, प्राणियों में सद्भावना हो, विश्व का कल्याण हो-मानवता के उत्थान का मार्ग प्रशस्त करते हैं।

विधायक अशोक कोठारी ने अपने संबोधन में जैन दर्शन के अनुमोदना सिद्धांत की व्याख्या बताई। कार्यक्रम के दौरान उपस्थित जनसमूह द्वारा नवकार महामंत्र का सामूहिक जाप किया गया। समारोह में माण्डलगढ़ विधायक गोपाल लाल, सहाड़ा विधायक लादुलाल पितलिया, वरिष्ठ जनप्रतिनिधि प्रशांत मेवाड़ा सहित अन्य प्रशासनिक अधिकारी, विभिन्न सामाजिक एवं धार्मिक संगठनों के पदाधिकारी, जैन समाज के वरिष्ठजन एवं बड़ी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित रहे।

# कृषि विभाग ने मानी भारी तबाही, बरसात और ओलावृष्टि से उजड़ा किसान

**झुंझुनूं, (निसं)।** अचानक बदले मौसम ने जिले के नवलगढ़ और गुढ़ागौड़जी इलाके में ऐसी कहर बरपाया कि अन्नदाता की उम्मीदें चंद मिनटों में बिखर गई। तेज अंधड़, आसमान चीरती बिजली और उसके बाद हुई भीषण ओलावृष्टि ने खेतों को तबाही के मंजर में बदल दिया, जहां कल तक फसलें लहलहा रही थी, वहां सफेद ओलों की मोटी परत और टूटी-बिखरी फसलें नजर आ रही हैं।

नवलगढ़ क्षेत्र के देवीपुरा बणी, खिरोड़, टोंकछिलरी, मोहनबाड़ी, बारवा और अंबेडकर नगर गांवों में कुदरत का सबसे ज्यादा कहर टूटा। वहीं गुढ़ागौड़जी, पोसाणा, खीवांसर, बजावा और छऊ गांव भी ओलावृष्टि से अछूते नहीं रहे। ग्रामीणों के अनुसार, ओलों का आकार बेर से भी बड़ा था। कुछ ही देर में खेत सफेद चादर से ढक गए और खड़ी फसलें जमीन पर बिछ गई। प्रारंभिक आकलन में सामने आया है कि कई गांवों में 30 प्रतिशत से लेकर 70 प्रतिशत तक फसलें पूरी तरह नष्ट हो चुकी है। ओलों की मार से प्याज और मिर्च की फसल जमीन में धंस गई, पौधे टूटकर खत्म हो गए। गेहूं और जौ की खड़ी फसलें तेज हवा और ओलों से गिर गईं, जबकि कटी फसलें पानी में भीगकर सड़ने की कगार पर हैं। हरी सब्जियों के पौधों के सिर्फ डंठल बचे हैं, उत्पादन लगभग खत्म हो गया है।

कृषि विभाग के संयुक्त निदेशक डॉ. राजेंद्र लांबा के अनुसार बेमौसम बारिश और ओलावृष्टि ने रबी की फसलों को गंभीर नुकसान पहुंचाया है। विशेष रूप से गेहूं, चना और जौ की फसलें प्रभावित हुई हैं। कटी फसलों के दाने काले पड़ने की आशंका है, जिससे उनकी गुणवत्ता और बाजार मूल्य दोनों गिरेंगे।

देवीपुरा के किसान जोधराम फागणा की आंखों में आंसू हैं। वे कहते हैं कि यह सिर्फ फसल नहीं, हमारे साल भर के सपने थे। कोई बेटी की शादी की तैयारी कर रहा था, तो कोई बैंक का कर्ज चुकाने की उम्मीद लगाए बैठा था। अब समझ नहीं आ रहा घर कैसे चलेगा।

ग्रामीणों ने प्रशासन से तुरंत विशेष गिरदावरी करवाने और वास्तविक नुकसान का आकलन कर उचित मुआवजा देने की मांग की है। किसानों का कहना है कि समय पर राहत नहीं मिली तो आर्थिक संकट और गहरा जाएगा।